P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-1) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

लोहागढ़ दुर्ग की स्थापत्यता का सांस्कृतिक एवं कलात्मक अध्ययन

मोनिका ठेनुआ
शोधार्थी,
ललित कला संकाय,
वनस्थली विद्यापीठ,
निवाई, राजस्थान, भारत

किरण सरना
प्रोफेसर,
ललित कला संकाय,
वनस्थली विद्यापीठ,
निवाई, राजस्थान, भारत

सारांश

अधिकांशतः प्राचीन स्मारकों के शिलालेखों की सटीक जानकारी के अभाव में स्मारकों की स्थापत्य के सम्बन्ध में प्राप्त अवशेष ही अज्ञातकाल के साक्षी के रूप में ग्राह्य किये जाते हैं जिनके आधार पर ही विस्मृत युगों की खोज एवं उनको साकार रूप दिया जाना सम्भव है। लेखक ने विभिन्न ग्रन्थों, साहित्यों, पुस्तकों, स्मारिकाओं का अध्ययन करने के उपरान्त ही "लोहागढ़ दुर्ग की स्थापत्यता का सांस्कृतिक एवं कलात्मक अध्ययन" को पूर्णरूपता प्रदान की है। इसके अन्तर्गत भरतपुर जिले की भौगोलिक स्थिति का संक्षिप्त विवरण देने के पश्चात् भरतपुर स्थित दुर्ग स्थापना में राजा सूरजमल को यागदान का वर्णन, स्थापत्य की दृष्टि से दुर्ग की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक स्थिति का वर्णन किया गया है।

मुख्य शब्द : सपालदक्ष, भग्नावशेष, महीनता, समाहित, अजेय, डन्डे, वृहत, द्रष्टव्य, अभयारण्य।

प्रस्तावना

राजस्थान की भौगोलिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन किये बिना भरतपुर जिले की भौगोलिक स्थिति का विवेचन किया जाना न्यायोचित नहीं होगा। राजस्थान भारत के पश्चिम भाग में $23^0 3'$ उत्तरी अक्षांश से लेकर $30^0 12'$ उत्तरी अक्षांश के मध्य तथा $69^0 30'$ पूर्वी देशान्तर से $78^0 17'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है और इसकी पश्चिमी सीमा पाकिस्तान से लगी है।[1] भौगोलिक दृष्टि से राजस्थान के पूर्व में गंगा–यमुना नदियों के मैदान, दक्षिण–पश्चिम में गुजरात के उपजाऊ मैदान, दक्षिण में मालवा का पठार तथा उत्तर–पूर्व में सतलज व्यास नदियों के मैदान स्थित हैं। राजस्थान पूर्व से पश्चिम 869 किमी तथा उत्तर से दक्षिण 826 किमी क्षेत्र में फैला हुआ है। इसका कुल क्षेत्रफल 324279 वर्ग किलोमीटर है। वैसे राजस्थान का नाम आते ही मरु प्रदेश में स्थित बड़े बड़े रेत के टीले, अरावली पर्वत, पठार, मुगल कालीन महल, किले दुर्ग, मन्दिर आदि मस्तिष्क पटल पर उभर आते हैं।

राजस्थान के गौरवशाली इतिहास में महान यौद्धा महाराणा प्रताप, राणा सांगा, महाराजा सूरजमल आदि का नाम अपनी वीरता एवं शौर्य के लिए सदैव स्मरणीय रहेंगे, जिन्होंने दुश्मन को नाको चने चबवाकर भागने को मजबूर कर दिया था। यहाँ की वीरांगनाओं की गाथा भी काफी दिलचस्प रही है जो अपने पति को युद्ध के मैदान में हारते देखकर जौहर में कूदकर अपने प्राणों की इतिश्री कर लेती थी।

राजस्थान की ऐतिहासिक स्थिति का विवेचन करने पर पाया गया कि इस प्रदेश में कई इकाईयाँ सम्मिलित थी जो अलग अलग नाम से सम्बोधित की जाती थी। जयपुर राज्य का उत्तरी भाग मध्यदेश का हिस्सा था तो दक्षिणी भाग सपालदक्ष कहलाता था। अलवर राज्य का उत्तरी भाग कुरुदेश का हिस्सा था तो भरतपुर, धौलपुर, करौली राज्य शूरसेन देश में सम्मिलित थे। इसी प्रकार प्रतापगढ़, झालावाड़ तथा टोंक का अधिकांश भाग मालवादेश के अधीन था। विभिन्न ऐतिहासिक प्रमाणों से प्रकट होता है कि राजस्थान का आदि–निवासी पूर्व–प्रस्तर युगीन मानव था। राजस्थान में प्राचीन काल से ही हिन्दू, बौद्ध, जैन तथा मध्यकाल से मुस्लिम धर्म के अनुयायियों द्वारा मन्दिर, स्तम्भ, मठ, मस्जिद, मकबरे, समाधियाँ और छतरियों का निर्माण किया जाता रहा है। इनमें कई भग्नावेश के रूप में तथा कुछ सही हालत में अभी भी विद्यमान है। इनमें कला की दृष्टि से सर्वाधिक प्राचीन देवालयों के भग्नावशेष हमें मिलते हैं। तीसरी सदी ईसा पूर्व से पांचवी शताब्दी तक स्थापत्य की विशेषताओं को बतलाने वाले उपकरणों में देवी–देवताओं, यक्ष–यक्षिणियों की कई मूर्तियाँ, बौद्ध, स्तूप, विशाल प्रस्तर खण्डों की चारदीवारी, बड़ी–बड़ी दीवारें आदि देखे जा सकते हैं।

रियासतकालीन स्थापत्य की धुंधली एवं अन्धकारपूर्ण अवस्था अब समाप्त हो चुकी है और राजस्थान की स्थापत्य संस्कृति काफी सशक्त हो चुकी है और स्थापत्य का एक विशेष रूप देखने को मिलता है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस लेख का प्रमुख उद्धेश्य भरतपुर स्थित लोहागढ़ दुर्ग की स्थापत्य कला के सांस्कृतिक एवं कलात्मक पक्षों को अतिसूक्ष्मता से प्रस्तुत करना है। जैसा कि वर्तमान समय में इतिहास की मान्यतायें बदल गयी हैं एवं संस्कृति और सभ्यता की खोज अब किसी भी स्थान विशेष के स्थापत्य कला के माध्यम से की जा रही है जिसके अन्तर्गत उस क्षेत्र की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक स्थिति को अतीत से वर्तमान में प्रस्तुत किया जा सकता है। इसी आधार पर लोहागढ़ दुर्ग की स्थापत्य कला के माध्यम से इस क्षेत्र में स्थित अन्य महल, दुर्ग, मन्दिर आदि की पुरातन संस्कृति और सभ्यता को इतिहास की गर्त से बाहर निकाला जा सकता है।

भरतपुर जिले की भौगोलिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भरतपुर जिला 5,066 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में फैला हुआ है जो राजस्थान का पूर्वी सिंहद्वार, पक्षियों का स्वर्ग स्थल, राजस्थान का प्रवेश द्वार भी कहलाता है। मानचित्र की दृष्टि से भरतपुर जिला $26^0$22′ से $27^0$50′ उत्तरी अक्षांश से $76^0$53′ से $78^0$17′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इसके पूर्व में हरियाणा, उत्तर प्रदेश (आगरा व मथुरा), पश्चिम में करौली, दौसा व अलवर तथा दक्षिण में धौलपुर है।[2] जिले की भरतपुर व नदबई तहसीलें मैदानी व समतल है जबकि बयाना व रूपवास तहसीलों में अरावली की पहाड़ियां स्थित हैं। यहाँ गुलाबी रंग का संगमरमर पाया जाता है। भरतपुर, बयाना व डीग उपखण्डों की भूमि सामान्यतया उपजाऊ और सपाट है। जिले की आकृति कटी–फटी, टेढी तथा विषम है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भरतपुर जिले की कुल आबादी 25,48,462 है जिसमें पुरूष 13,55,726 व महिलाओं की संख्या 11,92,736 है।

समीक्षा

राजस्थान की ब्रज भूमि के नाम से प्रसिद्ध भरतपुर जिला एक विशिष्ट स्थान रखता है। ईसा से पहले शताब्दी तक यूनानी हमलों की समाप्ति तथा शुंग शासक पुष्यमित्र के शासन काल के बाद दिल्ली, जयपुर व आगरा के बीच का यह समूचा क्षेत्र यौधेय और अर्जुनायन जाति के लोगों का गणराज्य बन चुका था। विजयगढ अथवा बयाना के निकट एक खुदाई में प्राप्त तीसरी सदी की पुरातात्विक सामग्री में भी इस तथ्य की पुष्टि होती है।

अनुश्रुतियों एवं पुरावशेषों से स्पष्ट है कि भरतपुर शहर की स्थापना ठाकुर चूडामन सिंह जाट ने भले ही की थी किन्तु इसको सजाने संवारने का काम राजा सूरजमल ने किया। इस शहर का नाम भगवान राम के भाई भरत के नाम पर रखा गया है।[3] लक्ष्मण इस राजपरिवार के कुलदेव माने जाते हैं। इसके पूर्व यह स्थान सोगरिया जाट सरदार रूस्तम के अधिकार में था, जिसको महाराजा सूरजमल ने जीता और 1733 ई. में भरतपुर नगर की नींव डाली। भरतपुर जाट राजाओं का गढ रहा है। जाट वंश का वास्तविक संस्थापक बदन सिंह को माना जाता है। बदन सिंह के बाद भरतपुर का शासक राजा सूरजमल हुआ जिन्हें जाट प्लूटो एवं जाट अफलातून कहा जाता है। महाराजा सूरजमल ने इस शहर में मुख्य रूप से लोहागढ दुर्ग का निर्माण करवाया जो सूरजमल के कला कौशल की गवाही देते हैं।[4]

इसमें भरतपुर के प्रथम कुशल जाट शासक महाराजा सूरजमल की महानता, वीरता व धार्मिक प्रेम का बखान करते हुए उनके द्वारा सुरक्षा की दृष्टि से निर्मित मिट्टी से निर्मित महल, दुर्ग, मन्दिर, जलाशय का बहुत ही खूबसूरती से चित्रण किया गया है।

महाराजा सूरजमल के अतिरिक्त अन्य जाट राजाओं द्वारा कराये गये पुनर्निर्माण कार्यों का वर्णन किया गया है। जिससे इस लेख की महत्ता और भी बढ़ जाती है। भरतपुर जिले में अवस्थित किले, महल, दुर्ग, मन्दिर आदि में बहुत ही महीनता से उकेरी गई मुगलकालीन चित्रकारी का कलात्मक अध्ययन समाहित किया गया है।

साम्प्रदायिक समन्वय करने वाले ऐतिहासिक युग पुरूष महाराजा सूरजमल थे। देश की समृद्धि तथा सुखद भविष्य के लिए हिन्दू–मुस्लिम एकता के कट्टर समर्थक थे। इसके परिणमास्वरूप सूरजमल ने भरतपुर में एक मस्जिद का निर्माण करवाया जो गंगा मन्दिर एवं लक्ष्मण मन्दिर के मध्य आज भी मौजूद है।

स्थापत्य कला एवं वास्तुकला के क्षेत्र में जाटों का महान् कार्य उनके द्वारा निर्मित विशाल एवं अजेय दुर्गों, श्रेष्ठ महलों, पवित्र मन्दिरों एवं भव्य स्मारकों से परिलक्षित होता है।

लोहागढ़ दुर्ग – एक परिचय

यद्यपि भारत देश में सैकड़ों छोटे बड़े दुर्ग, गढ़ी सदियों से अपनी शौर्य गाथाऐं सुनाने के लिये आज भी खड़े हैं किन्तु इन सब में केवल भरतपुर का लोहागढ़ दुर्ग ही अपराजित रह सका है। इस किले पर ब्रिटिश सरकार के सबसे बड़े फौजी लार्ड लैक ने सन् 1805 में चार बार आक्रमण किया और उसे मात खानी पड़ी।

अंग्रेज इतिहासकारों ने तो भरतपुर के जाट शासकों की वीरता से द्वेष रखते हुये, उन पर कोई महत्वपूर्ण लेखन कार्य ही नहीं किया, क्योंकि अंग्रेज जाटों के हाथों सन् 1805 ई. की अपनी पराजय को कभी भुला नहीं सके।[5]

"दुर्ग भरतपुर अडिग जिमि हिमगिरि की चट्टान,
सूरज के तेज कौ, अब लौ करत बखान।"
"इह जट्टन के छोहरा, दिया सुभट्टन पछार,
आठ फिरंगी, नौ गोरा, लड़े जाट के दो छोरा।।"

लोक गीतों की ये कुछ पंक्तियां आज भी ब्रज प्रदेश में बड़ी शान और गर्व से गाई जाती हैं। भरतपुर के लोहागढ़ किले की स्थापत्य कला ने राजस्थान के ही नहीं अपितु देश के बड़े से बड़े किले की शान को धूल में मिलाया है। सतत् एक ही ध्वज फहराने का गर्व केवल लोहागढ़ का दुर्ग ही कर सकता है।[6]

ऐतिहासिक गौरव, सांस्कृतिक वैभव और प्राकृतिक सुषमा के साथ साथ, लोहागढ दुर्ग की बेजोड वास्तुकला ने भी भरतपुर की महिमा में चार चांद लगाये

हैं। इस प्रकार के वास्तुशिल्पों में जहाँ डीग के महलों, सुरम्य उद्यानों व विचित्र शैली के मनोहारी फव्वारों, भरतपर के देवालयों और गोवर्धन की छतरियों में हिन्दू व मुगल स्थापत्य कला का समन्वय एक नवीन जाट वास्तुकला के रूप में विकसित हुआ, वहाँ डीग, कुम्हेर, भरतपुर, वैर, बयाना आदि स्थानों पर मैदानी दुर्गों के निर्माण में जाट शासकों की परिपक्वता स्पष्ट झलकती है। स्थापत्य का सांस्कृतिक दृष्टि से भरतपुर में स्थित लोहागढ़ किले का महत्व अत्यधिक बढ़ जाता है। इन पुरातन धरोहरों में से कुछ का अस्तित्व तो अभी भी है परन्तु अधिकांश क्षतिग्रस्त होकर विलुप्त हो गये हैं।

परिकल्पना

भारत ही नहीं अपितु विश्व के दुर्गों में केवल मात्र भरतपुर का लोहागढ़ दुर्ग ही अद्वितीय स्वरूप लिये हुए है। किसी न किसी किले (फोर्ट) पर कभी न कभी एक से अधिक विजेताओं की पताकाऐं फहराई गई होंगी किन्तु सतत् और एक ही पताका फहराने का गौरव लोहागढ़ को ही प्राप्त रहा है। भरतपुर दुर्ग के अजेय रहने के केवल दो कारण रहे हैं, एक इसकी भौगोलिक स्थिति एवं विलक्षण बनावट और दूसरा महाराजा सूरजमल की हिन्दू धर्म की रक्षा और देश की स्वतन्त्रता के लिए दृढ़ संकल्प, जिसमें भरतपुर के विस्तृत राज्य की समस्त जनता का उन्हें और उनकी सन्तति को तन, मन, धन से सहज सहयोग प्राप्त रहा था।[7] अधिकांश किले, गढ़ी या दुर्ग पठार मैदान में तो कहीं दोनों, पहाड़, पहाड़ियों पर मिलेंगे। कहीं जंगलों से घिरे तो कहीं पहाड़ियों से घिरी घाटियों में स्थित होंगे, परन्तु ऐसी जगह जहाँ दूर पास से पानी सिमटकर कटोरे की शक्ल अख्तियार कर लेता हो, जहाँ पर स्थित किला दूर से तो क्या, पास से भी दिखाई न देता हो, ऐसा अप्रतिम, अपराजेय, दुर्गम, अनोखा और सुदृढ़ किला सिर्फ भरतपुर में ही देखने को मिल सकता है।

भरतपुर तहसील के तुहिया गांव के रूस्तम नाम के सोगरिया जाट, जिसने मथुरा, आगरा के क्षेत्र से मुगल कोष को छीन कर सन् 1708 में सोगरिया जाट के पुत्र खेमकरन सोगरिया ने रूपारेल और बाणगंगा नदियों के संगम पर एक मिट्टी की कच्ची गढी का निर्माण किया, जसमें उसने गढी के सामने एक चार बुर्जो की पक्की गढी बनवाई थी जो चौबुर्जा नाम से विख्यात है। कुछ समय व्यतीत होने के साथ राजा सूरजमल ने इस दुर्ग को खेमकरन सोगरिया से छीन कर 1743 ई. में सूरजमल ने सुरक्षा व्यवस्था का ध्यान रखते हुए विशेष पद्धति से उसका पुनर्निर्माण करवाया, जो लगभग 8 वर्ष की अवधि में पूर्ण हुआ। इसकी रक्षा व्यवस्था अन्य दुर्ग, महलों से बिल्कुल भिन्न थी जिसके कारण मुगलों द्वारा कई बार इस दुर्ग पर किए गये बडे–बडे हमले भी बेकार साबित हो गये थे।[8]

भरतपुर शहर के उत्तर में एक मील की दूरी पर स्थित रूपारेल नदी के जल को मोती झील बन्ध में एकत्रित कर लिया जाता था। गम्भीर नदी के पानी को पहले शहर में कुछ मील दूर स्थित अजान बांध में और फिर वहाँ से अटल बांध में एकत्रित करने के पश्चात् बांध के पानी को किले के चारों ओर बनी हुई पक्की नहर में पहुंचा दिया जाता था। ऐसा करने का मुख्य उद्देश्य शहर वासियों को कुओं से पानी पीने के लिए और दैनिक उपयोग के लिये पर्याप्त मात्रा में पानी उपलब्ध कराना था। वर्तमान में जिस तरह अटल बांध नगर निवासियों के लिए आज जीवनदान नहीं दे पा रहा था, वैसे ही मोती झील बंध पिछले समय में भरतपुर राज्य के किले और नगर को बाहरी आक्रमण से बचाये रखता था। अतः यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं है कि भरतपुर के किले की रक्षा मोती झील पर ही आश्रित थी।

इस किले की दीवारें काफी ऊँची बनी हुई है। इसके चारों तरफ पक्की डेढ मील लम्बी मीठे पानी की नहर निर्मित कराई गई जिसको सूरजमल का उपनाम सुजान सिंह होने से "सुजान गंगा" भी कहा जाने लगा। इस नहर का काफी महत्व है क्योंकि इसके आसपास ही पानी मीठा है, बाकी यत्र–तत्र कुओं का पानी खारा है। नहर की चौडाई भी 150–200 फीट और गहराई 40–50 फीट करवाई गई। नहर के एक किनारे पर किले की ऊँची दीवार बनवाई गई और उसके सहारे चारों और पक्की सडक है जिसे ठण्डी सड़क से भी सम्बोधित किया गया। इसी के चारों ओर गोलाकार रूप में वर्तमान भरतपुर शहर बसा हुआ है। शहर के चारों ओर लगभग 60 फीट ऊँची और 25–30 फीट चौडी और नीचाई पर लगभग 200 फीट चौड़ी विशाल मिट्टी की कच्ची दीवार बनी निर्मित की गई जिसमें 10 दरवाजे इस तरह से बने हैं कि बाहर कहीं से यह दिखाई नहीं पडे। इस दीवार या सफील के चारों ओर 200–250 फीट चौडी और 30–40 फीट गहरी खाई भी निर्मित करवाई गई। इस खाई को जब चाहे पक्की मोरियों द्वारा पानी से भरा दिया जाता है और सुविधानुसार खाली भी किया जा सकता है। इस खाई के चारों ओर भूतल से 10–15 फीट ऊँची और 5 मील लम्बी पक्की सडक का निर्माण किया गया जिसे गिर्द सड़क के नाम से जाना जाता हैं। इस सड़क के बाहर की ओर खुली विस्तृत भूमि है जिसको नहर के पानी से जब चाहे मीलों तक जल प्लावित किया जा सकता था।

किले को बाहरी आक्रमण से बचाने के लिए मोती झील में एकत्रित पानी से "डन्डे" की खाई को भर दिया जाता था जिसको गिर्द की पक्की सडक के चारों तरफ मीलों तक फैला दिया जाता था। इस अथाह पानी के भण्डार के बल पर नगर और किले की सुरक्षा हेतु अपनाये गये विशेष प्रयोग के कारण ही जनरल लॉर्ड लेक की आक्रान्ता गोरी सेनाओं को चार चार बार मुँह की खानी पडी थी। उन्नत किस्म के इस विशाल, सुदृढ़ बुर्ज और प्राचीरें के साथ साथ आन बान पर मर मिटने वाले जाट योद्धाओं की शूरवीरता ने इस दुर्ग को इतना अजेय बना दिया था कि इस दुर्ग की ओर कुदृष्टि डालने की दुश्मन को एकाएक हिम्मत नहीं होती थी।

18वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में महाराजा सूरजमल द्वारा इस दुर्ग के अन्दर अपनी प्रिय महारानी किशोरी के निवास हेतु एक महल का निर्माण करवाया। इसलिए महाराजा बृजेन्द्र सिंह ने इसका नाम "किशोरी महल" रखा था। वर्तमान में भी यह इसी नाम से जाना जाता है।

इस महल में मुख्यतः दो चौक निर्मित कराये गये। मध्यकालीन स्थापत्य कला की विशेषताओं से युक्त इस महल के ऊपरी अग्र भाग का निर्माण किन्हीं कारणवश पूर्ण नहीं हो सका। पूर्वाभिमुखी महल के ऊपर दोनों ओर छतरियों का निर्माण करवाया गया जिसके मुख्य भाग में अपेक्षाकृत छोटी छतरियाँ निर्मित की गयी। महल के दूसरे चौक में कई कक्ष निर्मित करवाये गये। महल का यह भाग तीन मंजिला है। इस महल में सुन्दर जालियाँ, झरोखे, वृहत् आयताकार खम्भे, डिजायनयुक्त आले आदि द्रष्टव्य होते है। इस महल के पीछे की ओर अस्तबल बनवाया गया जहाँ राज परिवार के घोड़े बन्धे रहते थे। महल के दोनों चौकों के प्रवेश द्वारों पर कलात्मक व सुन्दर चित्रकारी करते हुए बेलबूटे व पत्रालंकार उत्कीर्ण किये गये हैं।

महल के द्वितीय चौक में बनी जालीदार संरचनाओं में फव्वारे भी लगवाये गये थे। महल के बाहरी हिस्से में रोशनी हेतु भूतल के दक्षिण हाल की दीवारों में दीपक रखने हेतु लघु द्वारनुमा आळे, ताकों का निर्माण करवाया गया। इनके ऊपरी भाग से जल प्रवाह हेतु प्रावधान रखा गया था। महल के बाहरी तरफ दक्षिण–पश्चिम भाग में जल आपूर्ति हेतु एक कुए का निर्माण भी करवाया गया था।

महल की पूर्वी दिशा में महाराजा सूरजमल की मूर्ति स्थापित करने के साथ साथ यहाँ के स्थानीय इतिहास को पत्थर पर उत्केरित किया गया है। महल के अन्दर फोटोग्राफ, मूर्तियों व पाण्डूलिपियों से युक्त कई दीर्घाओं का निर्माण किया गया है। यहाँ पर वर्ष 2008 में महाराजा सूरजमल स्मारक व पेनोरमा की स्थापना की गयी है।

निष्कर्ष

हिन्दू व मुगलकालीन राजाओं का और जन मानस का वास्तुशिल्प भी कई तत्कालीन पहलुओं को अपने भीतर समेटे हुए है। यदि उन पहलुओं जैसे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक तथा कलात्मक आदि का विस्तृत अध्ययन किया जाये तो लोहागढ़ दुर्ग की स्थापना के समस्त वास्तुशिल्पों का विकास किन स्तरों में हुआ होगा, के समस्त सांस्कृतिक और कलात्मक भूमिका को इतिहास के गर्त से बाहर निकाला जा सकता है। जिले में स्थित महल, दुर्ग, मन्दिर, छतरियाँ, उद्यान, जलप्रपात, फव्वारे आदि की स्थापत्य कला में मुगलकालीन व जाट स्थापत्य शैली के दर्शन होते हैं।[9]

सुझाव

भरतपुर जिले में और भी अनेक दुर्ग, महल, मन्दिर आदि निर्मित हैं, जिनका निर्माण विभिन्न राजाओं द्वारा किया गया है किन्तु इस लेख में राजा बदनसिंह व सूरजमल द्वारा निर्मित स्थापत्य कला की दृष्टि से लोहागढ़ दुर्ग का सांस्कृतिक एवं कलात्मक अध्ययन के आधार लिखा गया है। हमारी राय में अन्य पक्षों का अध्ययन महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त करने हेतु उपयोगी होगा।

अन्त में परिशिष्ट के माध्यम से लोहागढ़ दुर्ग के अतिरिक्त निर्मित अन्य महलों, दुर्गों, से सम्बन्धित तकनीकी शब्दावली, उनके बिरखमों का ऐतिहासिक एवं कलात्मक महत्व, वर्तमान में प्राप्त कतिपय रेखाचित्र, ताम्रपत्र, भरतपुर राज्य की स्थापना में महाराजा सूरजमल का योगदान प्रदर्शित करने वाले शिलालेख तथा महलों, दुर्गों, अभयारण्यों में भारतीय पुरातत्व विभाग द्वारा लगाये गये सूचना पट्ट आदि पक्षों को प्रस्तुत किया गया है।

हमारी राय में यह लेख बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *तिवाडी, अनिल कुमार एवं सक्सेना, डॉ हरि मोहन (1994), राजस्थान का भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।*
2. *ले. सी.के.एम. वाल्टर (1968), गजेटियर ऑफ भरतपुर स्टेट, आगरा।*
3. *भार्गव, वी.एस. (1971), राजस्थान के इतिहास का सर्वेक्षण, जयपुर।*
4. *डूडी, सूरजभान सिंह, (1974), 'जाट सेवक', ओरियन्टल प्रिन्टर्स, जयपुर, अंक–1*
5. *ले. सी.के.एम. वाल्टर (1968), गजेटियर ऑफ भरतपुर स्टेट, आगरा।*
6. *वर्मा रामवीर सिंह, स्मारिका : महाराजा सूरजमल।*
7. *फौजदार, राजेन्द्र, जाट समाज।*
8. *सहाय, ज्वाला, हिस्ट्री ऑफ भरतपुर*
9. *अहलावत, दिलीप सिंह (1992), जाट वीरों का इतिहास, डिम्पल, रोहतक द्वितीय संस्करण।*